Unit 4: बाजार के रूप तथा बाजार संतुलन

बाजार (Market) क्या हैं?

साधारण भाषा में:

बाजार का अर्थ स्थान से लिया जाता है, जहाँ वस्तु के क्रेता और विक्रेता भौतिक रूप में एक साथ एकत्रित होकर वस्तुओं और सेवाओं का क्रय विक्रय करते हैं।

अर्थशास्त्र में

बाजार वह क्षेत्र है जहाँ किसी वस्तु के क्रेता और विक्रेता आपसी संपर्क में आकर एक निश्चित वस्तु पर वस्तु का क्रय विक्रय करते हैं।

परिभाषाएं

प्रो. बेन्हम के अनुसार, **"बाजार वह क्षेत्र होता है जिसमें क्रेता और विक्रेता एक दूसरे के इतने निकट संपर्क में होते हैं कि एक भाग में प्रचलित कीमतों का प्रभाव दूसरे भाग में प्रचलित कीमतों पर पड़ता है"।**

बाजार की विशेषताएँ-

1. **एक क्षेत्र:** बाजार शब्द का अर्थ उस समय क्षेत्र से होता है जिसमें क्रेता और विक्रेता फैले हुए होते हैं।
2. **क्रेताओं और विक्रेताओं की उपस्थिति।**
3. **एक निश्चित वस्तु**
4. **वस्तु का एक निश्चित मूल्य**

प्रतियोगिता के आधार पर बाजार का वर्गीकरण

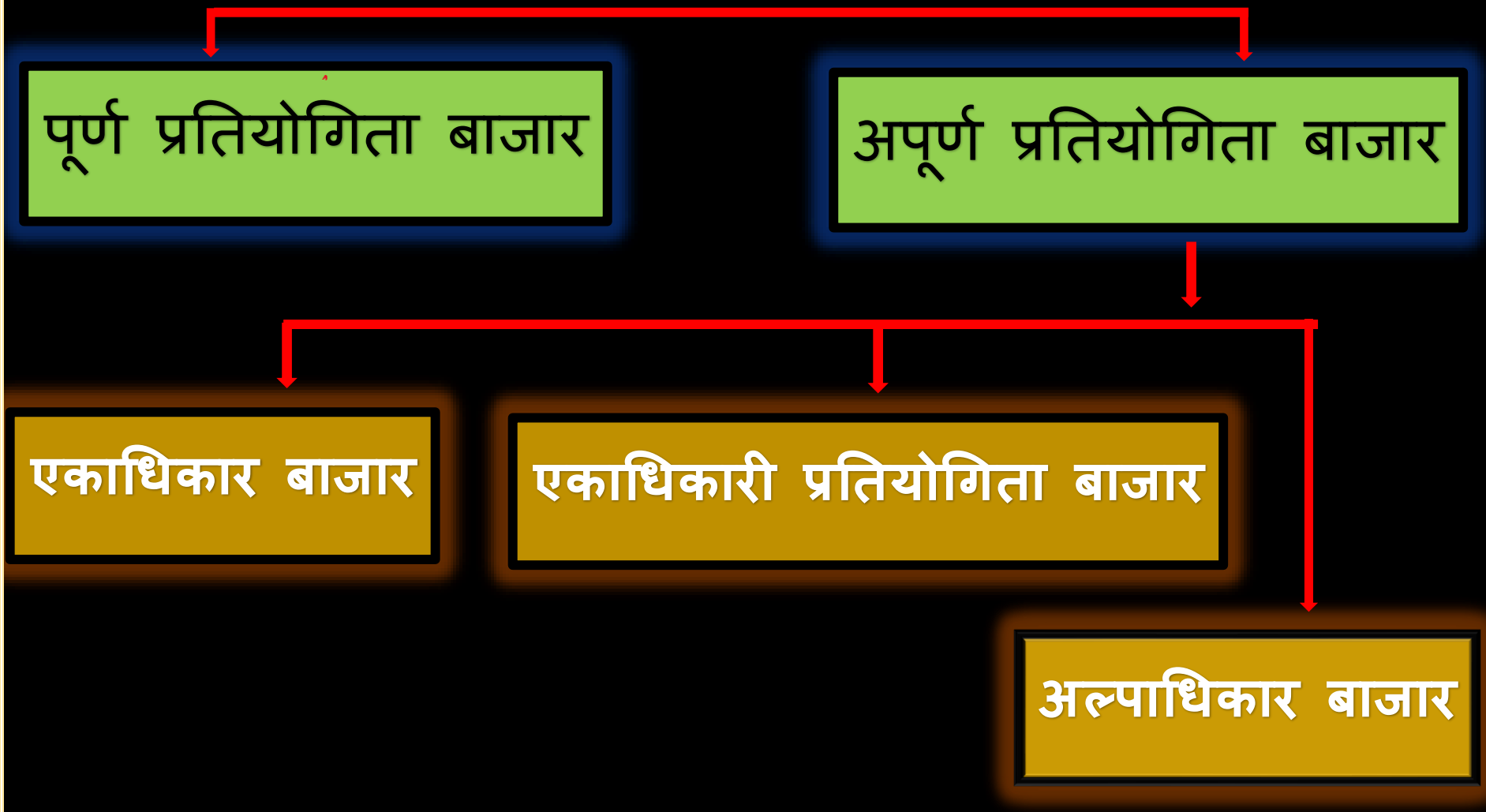

पूर्ण प्रतियोगिता (Perfect Competition Market)

बाजार की स्थिति जिसमें एक समान वस्तु के *बहुत अधिक क्रेता एवं विक्रेता* होते हैं।

एक क्रेता तथा एक विक्रेता बाजार की कीमत को प्रभावित नहीं कर पाते और यही कारण है कि पूर्ण प्रतियोगिता में बाजार ने *वस्तु की एक ही कीमत* प्रचलित रहती है।

परिभाषा

प्रो. लेफ्टविच के अनुसार, **"पूर्ण प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति है जिसमें बहुत सी फर्म एक समान वस्तुएँ बेचती हैं। इनमें से किसी भी फर्म की यह स्थिति नहीं होती कि वहाँ बाजार की कीमत को प्रभावित कर सकें"।**

पूर्ण प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- क्रेताओं और विक्रेताओं की अधिक संख्या
- बस्तु की समरूप इकाईयां
- फर्मो के प्रवेश व निष्कासन की पूर्ण स्वतंत्रता
- क्रेताओं और विक्रेताओं को बाजार की दशाओं का पूर्ण ज्ञान
- उत्पत्ति के साधनों की पूर्ण गतिशीलता बनी रहती है
- कोई यातायात लागत नहीं रहती

एकाधिकार बाजार (Monopoly)

एकाधिकार दो शब्दों से मिलकर बना है- ***एक*** और ***अधिकार*** ।

बाजार की वह स्थिति जब बाजार ने वस्तु का *केवल एकमात्र विक्रेता* हो।

एकाधिकारी बाजार दशा में वस्तु का एक अकेला बिक्रेता होने के कारण विक्रेता का *वस्तु की पूर्ति पर पूर्ण नियंत्रण* रहता है।

प्रो. मैककोनल के अनुसार, "एकाधिकार की स्थिति उस समय होती है, जब एक अकेली फर्म एक वस्तु का एकमात्र उत्पादक होती है जिसका कोई स्थानापन्न नहीं होता"

एकाधिकार की विशेषताएँ

- एक विक्रेता और अधिक क्रेता
- वस्तु के निकट स्थानापन्न का अभाव
- एकाधिकारी स्वयं कीमत निर्धारक
- नई फर्मों का प्रवेश पूर्णता प्रतिबंधित
- मांग वक्र का ऋणात्मक ढाल
- कीमत विभेद की संभावना

एकाधिकार उत्पन्न होने के कारण

- कच्चे माल का केंद्रीकरण
- कानूनी एकाधिकार
- गला घोंट प्रतियोगिता
- पेटेंट अधिकार

एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार (Monopolistic Competition Market)

यह बाजार *पूर्ण प्रतियोगिता तथा एकाधिकार का मिश्रित रूप* होता है। वास्तविक जगत में एकाधिकारी प्रतियोगिता बाजार ही प्रचलन में है।

इस बाजार दशा में समूह के उत्पादक *विभेदीकृत वस्तुओं* का उत्पादन करते हैं जो एक समान या समरूप नहीं होता, किंतु *निकटतम स्थानापन्न* अवश्य होता है।

परिभाषाएं

प्रो. लेफ्टविच के अनुसार, *"एकाधिकारी प्रतियोगिता वह बाजार स्थिति हैं जिनमें किसी वस्तु के बहुत से विक्रेता पाए जाते हैं, किंतु प्रत्येक विक्रेता की वस्तु को उपभोक्ता के मस्तिष्क में दूसरी विक्रेताओं की वस्तु से अलग होती है"।*

एकाधिकारी प्रतियोगिता की विशेषताएँ

- विक्रेताओं की संख्या अधिक होना
- विभेदीकृत वस्तुओं का उत्पादन
- आप प्रतिबंधित प्रवेश एवं बहिर्गमन
- विक्रय लागत अधिक होना
- बाजार का अपूर्ण ज्ञान
- गैर कीमत प्रतियोगिता का पाया जाना
- फर्म की कीमत नीति

अल्पाधिकार बाजार (Oligopoly Market)

अल्पाधिकार अपूर्ण प्रतियोगिता का वह रूप है जिसमें उद्योग या समूह में केवल कुछ फर्में होती है जो एक दिए गए उत्पादन क्षेत्र में या तो समरूप वस्तुएं बनाती है या फिर उनकी वस्तुओं में *'उत्पादन विभेदीकरण'* पाया जाता है।

उदहारण:

अल्पाधिकारी बाजार की मुख्य विशेषताएं

- विक्रेताओं की कम संख्या
- कीमत एवं उत्पादन निर्धारण की नीतियों में विक्रेताओं के बीच पारस्परिक निर्भरता।
- विभिन्न फार्मों के उत्पादों के लिए ऊंची मांग की आड़ी लोच।
- विज्ञापन एवं विक्रय लागत से अधिक होना।
- प्रतिद्वंद्वियों के बीच निरंतर संघर्ष पाया जाना।

पूर्ण प्रतियोगिता में संतुलन कीमत निर्धारण

संतुलन शब्द का अभिप्राय है किसी बदलाव की प्रवृति का अनुपस्थित होना।

संतुलन कीमत ऐसी स्थिति को दर्शाती है। जहाँ कीमत को निर्धारित करने वाले शक्तियां में किसी बदलाव की कोई प्रवृत्ति नहीं पाई जाती है।

इस प्रकार,

संतुलन कीमत वह कीमत है जो मांग एवं पूर्ति की शक्तियां द्वारा उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तु की मांग और वस्तु की पूर्ति आपस में बराबर होती है।

संतुलन कीमत = बाजार मांग = बाजार पूर्ति

पूर्ण प्रतियोगिता में संतुलन कीमत निर्धारण

प्रो. मार्शल के अनुसार किसी वस्तु की कीमत उस वस्तु की उत्पादन लागत ***(पूर्ति पक्ष)*** तथा उस वस्तु की उपयोगिता ***(मांग पक्ष)*** दोनों द्वारा निर्धारित होती है।

रिकार्डो

संतुलन कीमत का निर्धारण केवल मांग पक्ष के द्वारा

जेवंस

संतुलन कीमत का निर्धारण केवल पूर्ति पक्ष के द्वारा

इस प्रकार **मार्शल** ने इस बात पर बल दिया कि **मांग और पूर्ति** दोनों शक्तियां ***कीमत निर्धारण*** में क्रियाशील होती है तथा *वस्तु की कीमत उस बिंदु पर निर्धारित होती है जहाँ वस्तुओं की मांग तथा वस्तुओं की पूर्ति परस्पर बराबर हो जाते हैं।*

प्रो. मार्शल ने बताया कि जिस प्रकार कैंची के दो फलक कागज काटने के लिए आवश्यक है, उसी प्रकार वस्तु की कीमत निर्धारण के लिए मांग पक्ष एवं पूर्ति पक्ष दोनों का होना आवश्यक है।

उदाहरण

प्रति इकाई कीमत	वस्तु की पूर्ति	वस्तुओं की मांग
10	100	20
8	80	40
6	**60**	**60**
4	40	80
2	20	100

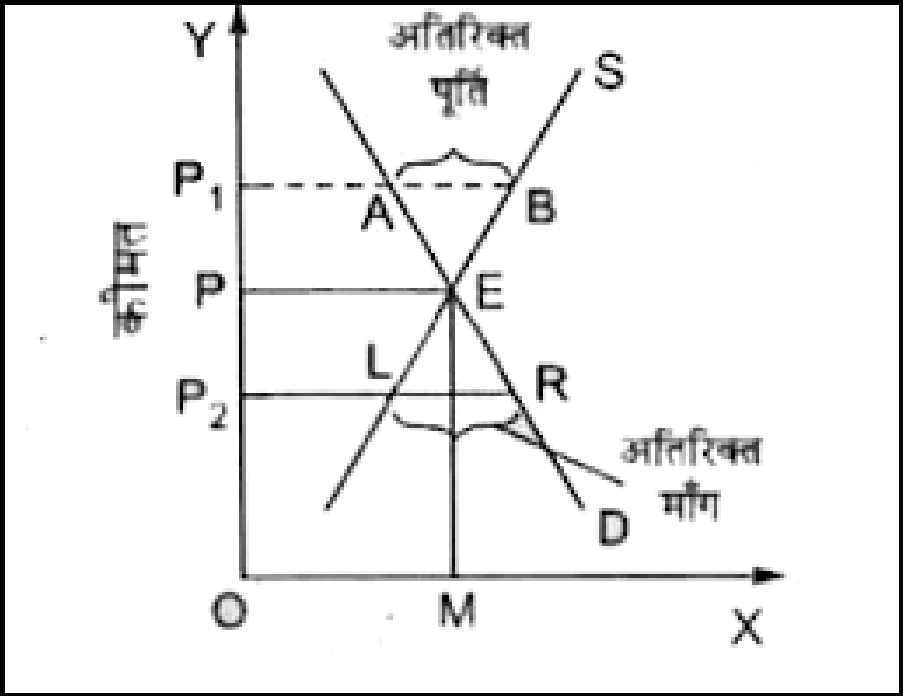

संतुलन कीमत में परिवर्तन

(Change in Equilibrium Price)

1. केवल मांग में परिवर्तन
2. केवल पूर्ति में परिवर्तन
3. मांग और पूर्ति दोनों में परिवर्तन

केवल मांग में परिवर्तन जबकि पूर्ति स्थिर रहती है

जब पूर्ति वक्र में कोई परिवर्तन न आए, पर मांग में परिवर्तन आ जाए तो उसका प्रभाव संतुलन, कीमत और संतुलन मात्रा दोनों पर पड़ता है। मांग में परिवर्तन कई कारणों से हो सकता है जैसे:

- उपभोक्ता की आय में परिवर्तन।
- संबंधित वस्तुओं की कीमतों में परिवर्तन।
- स्थानापन्नो की उपलब्धि।
- जनसंख्या में वृद्धि।
- फैशन आदि में वृद्धि।

मांग में परिवर्तन की निम्नलिखित दो स्थितियां हो सकती है:

मांग में वृद्धि

जब पूर्ति स्थिर रहती है और केवल मांग में वृद्धि हो जाती है तो ऐसी स्थिति में संतुलन कीमत और संतुलन मात्रा दोनों में वृद्धि होती है।

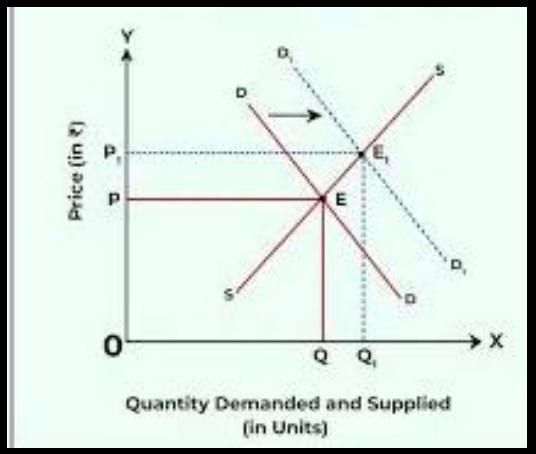

मांग में कमी

पूर्ति के स्थिर रहने की दशा में यदि केवल मांग में कमी होती है तो ऐसी दशा में संतुलन, कीमत और संतुलन मात्रा दोनों में कमी होती है।

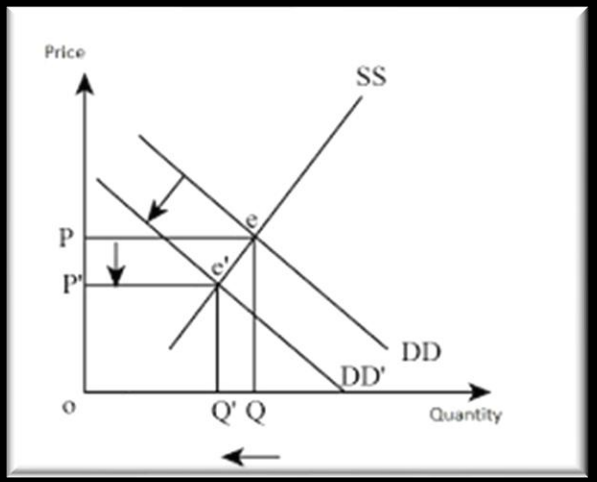

पूर्ति में परिवर्तन जबकि मांग स्थिर रहे

यदि वस्तुओं की मांग में कोई परिवर्तन न हो। उस दशा में पूर्ति में होने वाले परिवर्तन से संतुलन, कीमत और संतुलन मात्रा दोनों पर प्रभाव पड़ता है।

पूर्ति में परिवर्तन कई कारणों से हो सकता है जैसे:

- कच्चे माल की कीमत में परिवर्तन।
- श्रम मूल्य में परिवर्तन
- मशीनरी, औजार, आदि के मूल्य में परिवर्तन।
- उत्पत्ति के पैमाने का विस्तार अथवा संकुचन।
- उत्पादन तकनीक में परिवर्तन आदि।

पूर्ति में परिवर्तन दो प्रकार से हो सकते हैं:

पूर्ति में वृद्धि

यदि वस्तु की मांग स्थिर रहे और केवल वस्तु की पूर्ति बढ़ने पर पूर्ति विभाग दाईं ओर खिसक जाता है, जिससे संतुलन मूल्य गिर जाता है, लेकिन संतुलन मात्रा में वृद्धि हो जाती है।

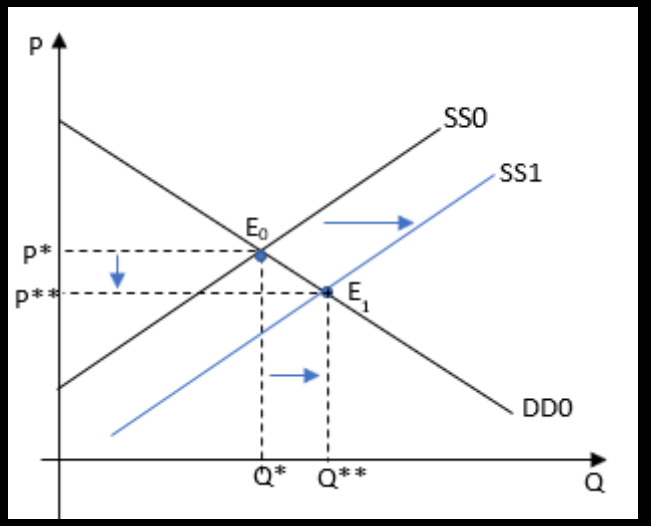

पूर्ति में कमी

यदि वस्तु की मांग यथावत बनी रहे तो पूर्ति में कमी होने से संतुलन कीमत बढ़ जाएंगी और संतुलन मात्रा में कमी आ जाएगी।

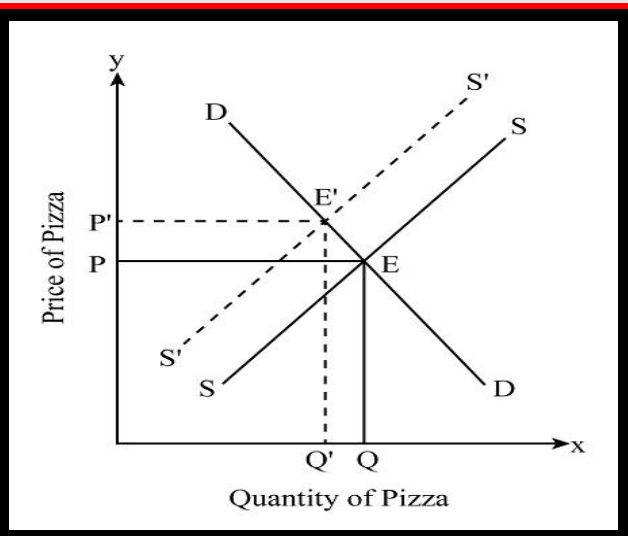

मांग एवं पूर्ति के एक साथ परिवर्तन

1. मांग एवं पूर्ति में एक साथ वृद्धि
2. मांग एवं पूर्ति में एक साथ कमी

मांग एवं पूर्ति में एक साथ वृद्धि

यदि मांग में वृद्धि अधिक और पूर्ति में वृद्धि कम हो तो संतुलन कीमत बढ़ जाएगा।

यदि मांग और पूर्ति दोनों में वृद्धि समान हो तो संतुलन मात्रा में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

यदि मांग में वृद्धि कम और पूर्ति में वृद्धि अधिक हो तो संतुलन

THE ECONOMICS GURU
EDUCATION | INSPIRATION | KNOWLEDGE

LIKE AND ***SHARE*** The Video

SUBSCRBE THE CHANNEL

THE ECONOMICS GURU

FOLLOW ME ON INSTAGRAM / @theeconomicsguru

FOLLOW ME ON FACEBOOK / NAKUL DHALI

For PDF visit my website: www.theeconomicsguru.com